इस्पात के उत्पादन के लिये जापानी तकनीक का अपनाया जाना

2379. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :** क्या इस्पात, खान और कोयला मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में किन-किन स्थानों पर इस्पात, बिलिट, स्पोंज, लोहा आदि का उत्पादन होता है ; उनका अलग-अलग वार्षिक उत्पादन कितना है ; और देश को उनकी कितनी आवश्यकता है ;

(ख) क्या यह सच है कि कोई भी एकक अपनी शत प्रतिशत क्षमता अथवा 80 प्रतिशत क्षमता पर भी उत्पादन नहीं कर रहा है ; यदि हां, तो इसके क्या कारण है ;

(ग) सरकार अच्छे किस्म का कोयला, जो अच्छी मशीनरी के साथ अच्छा और सस्ता उत्पादन करने के लिए जरूरी है, मुहैया कराने के लिए क्या कदम उठाने का विचार रखती है ;

(घ) इस्पात उत्पादन के भारतीय और जापानी ढंग में क्या अन्तर है ;

(ङ) क्या इस बारे में कोई मूल्यांकन किया गया है, और यदि हां, तो इसका ब्यौरा क्या है ;

(च) क्या सरकार इस्पात के उत्पादन के लिए जापानी तकनीक को अपनाने का विचार रखती है ; और

(छ) यदि हां, तो इस संबंध में ब्यौरा क्या है ?

इस्पात विभाग में राज्य (मंत्री श्री के० नटवर सिंह): (क) देश में इस्पात का उत्पादन अथवा इस्पात की उपलब्धता निम्नलिखित स्रोतों से की जाती है :—

1. भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, राउरकेला, बर्नपुर तथा जमशेदपुर के सर्वतोमुखी इस्पात कारखाने
2. गौण उत्पादक

वर्ष 1985-86 में देश में इस्पात की मांग तथा उपलब्धता का अनुमान निम्नलिखित है :—

मांग	113.5 लाख टन
उपलब्धता	99.2 लाख टन
अन्तर जिसे आयात से पूरा करने की संभावना है।	14.3 लाख टन

वर्ष 1985-86 में 99.2 लाख टन की उपलब्धता निम्नलिखित में से की जाएगी :—

1. सर्वतोमुखी इस्पात कारखाने	77 लाख टन
2. गौण उत्पादक	22.2 लाख टन
कुल :	99.2 लाख टन

वर्ष 1985-86 में सर्वतोमुखी इस्पात कारखानों में विक्रय इस्पात के कारखाना वार उत्पादन की योजना का ब्यौरा विवरण में दिया गया है।

गौण उत्पादक सम्पूर्ण देश में फैले हुए हैं।

(ख) "सेल" के इस्पात कारखानों में क्षमता का उपयोग निम्नलिखित तालिका में दिखायी गयी है :—

विक्रय इस्पात	क्षमता का उपयोग	
	1984-85 (वास्तविक)	1985-86 (योजना)
भिलाई इस्पात कारखाना	*90%	*89%
राउरकेला इस्पात कारखाना	83%	82%
बोकारो इस्पात कारखाना	74%	87%
दुर्गापुर इस्पात कारखाना	50%	58%
"इस्को"	48%	60%

*भिलाई इस्पात कारखाने के 25 लाख टन चरण के संबंध में।

जिन कारणों से क्षमता के उपयोग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, वे है :— बढ़िया किस्म के कच्चे माल का पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होना, अपर्याप्त बिजली, अप्रचलित प्रौद्योगिकी तथा उत्पादन प्रणाली और उपस्करो का पुराना होना ।

(ग) इस्पात कारखानों के लिये कोककर कोयले की क्वालिटी मे सुधार करने के लिये कुछ निम्नलिखित उपाय किये गये हैं :—

(1) शोधनशालाओंको कोयले का प्रेषण करने से पूर्व कोयला खानें यह सुनिश्चित करेंगी कि कोयले में से मिट्टी की परतें तथा पत्थर अलग कर दिये जायेंगे ।

(2) शोधनशालाओं में सम्मिश्रण के लिये उपलब्ध सुविधाओ का यथासम्भव अधिकाधिक इस्तेमाल किया जायेगा ;

(3) कोककर कोयले के सभी स्रोत, जो कोल इण्डिया लिमिटेड तथा "सेल" द्वारा सयुक्त रूप स परीक्षण करने पर उपयुक्त नही पाये गये थे, उन्हें शोधनशालाओ से अलग किया जा रहा है । इस प्रकार शोधनशालाओं के लिये फीड कोल की क्वालिटी मे सुधार होगा और परिणामस्वरूप इस्पात कारखानों के लिये शोधित कोयले की क्वालिटी मे सुधार होगा ।

(4) आयात किये गये बेहतर क्वालिटी के कोककर कोयले को "सेल" के कारखानों में देशीय कोयले के साथ मिलाया जा रहा है ;

(घ) और (ङ) जापान के इस्पात उद्योग ने लोहा तथा इस्पात बनाने की अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी तथा स्वचालित यंत्र अपनाये है । वे क्षेत्र, जिनमें जापान को महत्वपूर्ण लाभ हुआ है, इस प्रकार है :—

(1) प्रशिक्षित भार, हाई टाप प्रेसर, उच्च ताप आदि सहित भट्टियों के आकार के अपस्केलिंग से धमन भट्टियों को काफी अधिक स्तर तक ला कर उत्पादकता मे वृद्धि करना ।

(2) खुले मुंह की भट्टी अप्रचलित प्रणाली के स्थान पर बेसिक आक्सीजन भट्टी प्रणाली से पूरी तरह से इस्पात बनान। ;

(3) निरन्तर ढलाई की प्रक्रिया, जिस से काफी उत्पादन होता है, से ब्लूमिंग स्लेबिंग मिलों के द्वारा इन्गट कास्टिंग तथा बेलन को अर्द्ध तैयार माल मे बदलन। ;

(4) इस्पात कारखानों में स्वचालित यंत्रो का अधिकाधिक इस्तेमाल ।

(च) और (छ) सातवीं योजना के दौरान "सेल" के कारखानों द्वारा लोहा तथा इस्पात बनाने की अपनी प्रौद्योगिकी को अद्यतन बनाने की योजना है । "सेल" ने अपनी प्रौद्योगिकियों को अद्यतन करने के लिये लोहा तथा इस्पात बनाने वाली ख्याति-प्राप्त कुछ कम्पनियों / संगठनों की सहायता प्राप्त करने के लिये लिखा-पढ़ी की है । "सेल" ने उनमें से एक कम्पनी के साथ सहयोग के लिये समझौता किया है ।

इस समझौते मे भागीदारी तथा सहयोग के रूप में हमारी प्रौद्योगिकी को अद्यतन करने तथा उसका आधुनिकीकरण करने के लिये हमारे कारखानों के लिये उपयुक्त अनुभव, विशेषज्ञता, प्रणाली तथा विधि-तन्त्र के उचित अन्तरण की व्यवस्था की गयी है । यह समझोता जुलाई, 1985 से लागू है । हमारे कारखानों में जापान की प्रौद्योगिकी, निर्माण

तथा प्रबन्ध की पद्धति लागू हो जाने पर भारतीय इस्पात उद्योग में महत्वपूर्ण लाभ होने की सम्भावना है।]

विवरण

वर्ष 1985-86 (योजनागत) में सर्वतोमुखी इस्पात कारखानों में विक्रय इस्पात का उत्पादन

(लाख टन)

कारखाना	योजना
भिलाई इस्पात कारखाना, भिलाई	20.4
दुर्गापुर इस्पात कारखाना, दुर्गापुर	7.2
राउरकेला इस्पात कारखाना, राउरकेला . .	10.0
बोकारो इस्पात कारखाना, बोकारो	17.2
इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कंपनी लि0, बर्नपुर . .	4.8
टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लि0, जमशेदपुर . .	17.4
कुल : . . .	77.0

रूस के साथ व्यापार

2380. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :** क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत वर्ष रूस से आयात की गई तथा रूस को निर्यात की गई चीजों का ब्यौरा क्या है, इनकी कितनी-कितनी कीमत थी, सरकारी क्षेत्र तथा गैर-सरकारी क्षेत्र ने कितना-कितना व्यापार किया ;

(ख) क्या रूस के साथ व्यापार रुपयों में भुगतान के आधार पर किया जाता है;

(ग) गत वर्ष रूस को कितनी-कितनी मात्रा में बासमती और उसना चावल निर्यात किया गया और इनकी कीमत कितनी-कितनी थी; और

(घ) रूस के साथ व्यापार में सुधार करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

वाणिज्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पी० ए० संगमा) : (क) 1984-85 के दौरान (अप्रैल-दिसम्बर), भारत और सोवियत रूस के बीच 2361.47 करोड़ रुपये (अनन्तिम) का व्यापार हुआ। सोवियत संघ से आयात की गयी मुख्य वस्तुओं में कच्चा तेल तथा पैट्रोलियम उत्पाद, मशीनरी, उपस्कर तथा अतिरिक्त पुर्जे, अलौह-धातुएं, उर्वरक, रसायन तथा भेषज, अखबारी कागज आदि शामिल है। सोवियत रूस को निर्यात की गयी मुख्य मदों में कृषि उत्पाद, चमड़ा तथा चमड़ा उत्पाद, वस्त्र, खनिज तथा अयस्क, इन्जीनियरी माल और औषधियां तथा भेषजीय उत्पाद शामिल हैं।

निजी क्षेत्र और सार्वजनिक क्षेत्र के बीच हुए व्यापार के आंकड़े अलग से नहीं रखे जा रहे है।

(ख) जी हां।

(ग) 1984-85 के दौरान, सोवियत रूस को 67.27 करोड़ रुपये मूल्य के 1,01,505 मैंटन बासमती चावल का निर्यात किया गया। 1984-85 के दौरान गैर-बासमती चावल के निर्यात की अनुमति नहीं थी।

(घ) सोवियत संघ के साथ व्यापार को सुधारने के उद्देश्य से, सरकार द्वारा लगातार विभिन्न कदम उठाए जा रहे है।